सत्य साहित्य

साक्षात्कार शताब्दी उत्सव

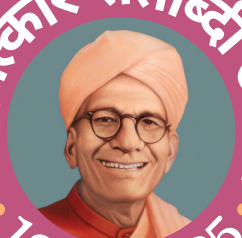

1925-2025

सत्य साहित्य, श्रीरामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष 8 / अंक 4, जुलाई 2025 • Year 8 / No. 4, July 2025

अपने पथ पर आप चलाओ,
पथ-पतन न पाऊं मैं ।।
पावन पथ है पावन प्रभु तेरा,
उस से पैर हटे न मेरा ।
पर पन्थों की पगडंडी पर,
स्वप्नों में भी न जाऊं मैं ।।1।।

तेरे पथ का पथिक मैं प्राणी,
संशय का न पाऊं हानि ।
पग पग पर डगमग न डोलूं,
प्रेम अचल उर लाऊं मैं ।।2।।

(परम पूजनीय स्वामी जी की डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- बधाई / Shri Chaitanya
- परमेश्वर बड़े दयालु
- संत कृपा
- श्रीरामशरणम् एक ऐतिहासिक विवरण –कण्डाघाट
- आप बीती
- विभिन्न केन्द्रों से
- कैलेन्डर
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य
मूल्य (Price) ₹5

बधाई

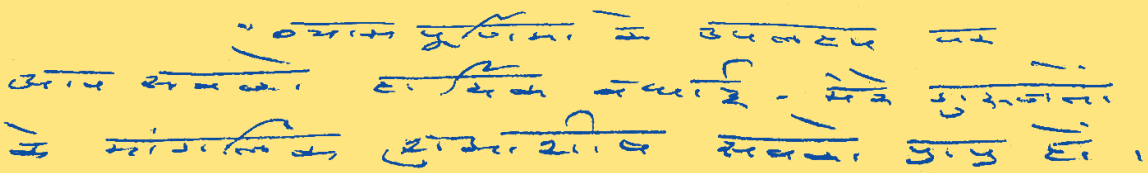

Heartfelt greetings to all on the occasion of Vyas Purnima — may everyone receive the sacred and auspicious blessings of my revered Gurus.

SHRI CHAITANYA

सत्यानन्द

In Bengal, there was a noble and graceful Brahmin lineage, well-known to all who lived in the town of Nadia. In that auspicious family line, Chaitanya was born—remarkable and exceptional in learning. (1)

He became a highly proficient and distinguished scholar, well-versed in grammar and the New School of Indian logic and philosophy. Once, for the sake of his ancestors, he went to Gaya and performed the Shraddha (ritual offerings) ceremony, observing all the proper customs and prescribed rituals. (2)

There, he met a devotee who was deeply immersed in the constant chanting of Ram Naam. He explained to Chaitanya that chanting Ram Naam is the highest spiritual practice, and initiated him into its repetition. (3)

From that moment, he became a renunciate at heart—a devotee of Ram, filled with deep love for God. Through spiritual discipline, his body became a repository of immense power. (8)

Through his yogic power, he vividly witnessed the entire divine play.

He constantly chanted the Name of God with his mouth and mind—so deeply that

his very body began to resonate with the sound of Ram. (9)

Engaged in joyous chanting day and night, he would be filled with powerful divine energy. Whenever spiritual ecstasy surged within him, he would become absorbed in dance and song. (10)

When devotees gathered around him, the sound of "Hari Bol" (chant the Name of God) would echo all around. Singing "Ram Ram," they would lose themselves in ecstatic dance and song. (11)

Wherever the sacred procession passed, they sang and danced, enacting divine lilas along the way. Onlookers, enchanted by the sight, found the devotees utterly endearing in their devotion. (12)

Distinctions of caste and class would dissolve, and everyone would cleanse themselves of feelings of superiority and inferiority. As the drum of oneness resounded, all walls of division and fear would collapse like a heap. (13)

He uplifted even those of other faiths, offering them the support of Ram Naam.

He gave everyone the bliss-giving Name, quenching the deep spiritual thirst of many. (14)

In the land of Bengal, he spread the glory of the Divine Name and popularized the path of devotion and love. He taught all to sing the praises of Ram and revealed to them the highest spiritual path. (15)

Those who came to seek refuge—from all four castes, even those regarded as the lowest—he united them all as one and uplifted them through the gift of Ram Naam. (16)

There grew a deep unity among them, and the entire congregation became a closely-knit spiritual family. Wherever they went, they showered devotion and drew everyone together in a single thread of unity. (17)

Such were the deeds of Chaitanya that even hostile people became peaceful.

He instilled true devotion and love in their hearts and made them his disciples. (23)

Among groups of Yavanas (non-Hindus), he preached the Divine Name, kindling deep love in their hearts through his pilgrimages. With devotional songs and soul-stirring melodies, he awakened their spiritual longing—roaming the land, ecstatically immersed in the glory of God's Name. (24)

He could initiate a seeker with a single loving touch, and at once they would find shelter in the Name of God. Such a person would become absorbed in devotion—laughing, singing, and even weeping in divine ecstasy. (25)

Through devotional singing and dancing, he delighted the Divine and entered into ecstatic states of devotion. Such was this saint—full of noble qualities—who freely shared Ram Naam with all. (26)

The world recognized him as an ascetic free from attachment,and all regarded him as the king of devotees.He was proclaimed a saint of equal vision, beloved by all and honoured everywhere. (27)

His every relationship was rooted in devotion; he was a true knower of the path of bhakti. He spread the spirit of loving devotion far and wide—and in the end, attained the divine abode of Ram. (28)

(Bhakti Prakash, Pg 391-394) ■

परमेश्वर बड़े दयालु

प्रेम

जितने भी महान् पुरुष हुए हैं वे दूसरों के संकट अपने ऊपर लेते रहे हैं। परमेश्वर बड़े दयालु हैं। जो उसके हो जाते हैं, वे भक्त भी बड़े कृपालु होते हैं। वे दूसरों के लिए अपने को बलिदान कर देते हैं। महाराज से लोग अपने कष्टों का वर्णन किया करते, महाराज सुन लेते और प्रार्थना करते। जो आत्मा शरीर में नहीं, वे उन्हें बता भी जाती थी। बहुत बार चिकित्सा तो अवश्य कराने को कह देते पर यह भी था कि कष्ट ले लेते थे। शान्त भाव से सहन कर लेते थे। कोई पूछता तो कहते mystery है– रहस्य है।

जगत् में वही पूजनीय है जो दूसरों की सेवा करते हैं, दूसरों के कष्ट निवारण करते हैं।

महाराज जी अपने लिए कुछ नहीं करवाना चाहते, परन्तु दूसरों के लिए करने हेतु तत्पर रहते। एकदा स्वामी जी महाराज मालिश कर रहे थे, प्रेम जी महाराज ने चाहा और कहा, ''मैं कर दूँ''? स्वामी जी ने न करते हुए कहा,''अपना हाथ जगन्नाथ।'' महाराज जहाँ अपने बन्धुओं के लिए नित्य प्रार्थना किया करते वहाँ औरों के लिए भी, दूसरे देशों के लिए भी, नेताओं के लिए भी। एक बार हिन्दी आन्दोलन चल रहा था। वहाँ लाठी चार्ज हुआ, महाराज ने प्रार्थना की और कहा 3–4 दिन में न्यायपूर्वक समझौता हो जाएगा। स्वामी जी देवत नाँगल सत्संग में आ गए। सूचना मिली तीसरे दिन फैसला हो गया। प्रार्थना का कितना प्रभाव है। श्री महाराज कहा करते जहाँ दूसरों की सेवा, वहाँ भगवान् आप विद्यमान् हैं। यह भी याद रहे कि जब तक मान है परमेश्वर तब तक वहाँ नहीं हो सकते और जहाँ परमेश्वर की प्रीति, अभिमान नहीं रह सकता। सेवा से हम उनकी कृपा के पात्र बन सकते हैं। सेवा करने वाले का जीवन भली भान्ति चला करता है। दूसरे भी प्रभावित होते हैं। दूसरों के कष्ट निवारण का यत्न करें। परम पुरुष की कृपा का पात्र बनने के लिए सेवा अनिवार्य है। जिस पर राम कृपा, उस पर सब की कृपा। हे राम! तेरी कृपा हो, कृपा हो, कृपा हो।

(परम पूजनीय श्री महाराज जी की डॉयरी से, साधना सत्संग हरिद्वार 26.03.1972 परम पूजनीय श्री प्रेमजी महाराज के श्रीमुख वाक्य) ■

संत कृपा

उन संतों की संगति और जिनके साधन का अनुभव है - जिनके पास नाम है - भक्ति है - ऐसे, के मुख से सुने वचन, होगा कल्याणकारी।
ऐसों की संगति जन्म-मरण के बंधनों से मुक्त कराके परमानन्द प्राप्ति करायेगी। यही है सत्गुरु।

विश्वामित्र

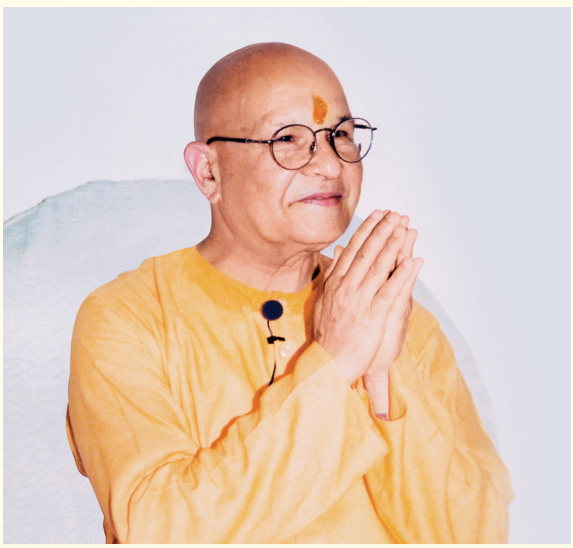

शिवाजी समर्थ गुरु रामदास के लिए रात्रि के समय जंगल में जाकर शेरनी का दूध अपने हाथ से दोह कर ले आए हैं। उस समय वर्षा हो रही थी और तूफ़ान सा वातावरण था। गुरु महाराज को कोई तकलीफ़ तो थी नहीं लेकिन सिर्फ ईर्ष्यालु शिष्यों को वह, यह बताना चाहते थे कि संत, श्रद्धालु शिष्य को क्यों प्यार करता है। संत गुरु, श्रद्धालु शिष्य को उसकी श्रद्धा के कारण, निष्ठा के कारण, उसकी प्रीति के कारण और उसकी सेवा भावना के कारण प्यार करता है। शिवाजी ने अपने सब मित्रों को जो वहाँ बैठे हुए थे कहा,''न जाने हज़ारों या लाखों बार अब तक मर चुके हैं, एक बार गुरु के लिए मर गए तो क्या हुआ? जो गुरु के लिए मर जाता है, देश के लिए मर जाता है, परमात्मा के लिए मर जाता है, मामूली सी बात है कि जो on duty मरता है उसको कितना सम्मान दिया जाता है। यह तो वास्तविक duty है गुरु के प्रति, परमात्मा के प्रति। जो on duty कोई मरता है वह मृत्यु, कोई मृत्यु थोड़ी होती है। ऐसे व्यक्ति को मृत्यु मार नहीं सकती वे सदा जीवित रहते हैं।'' शिवाजी अपने मित्रों को यही शब्द समझाते हैं,''अरे! एक बार गुरु के लिए मर गए तो क्या हुआ, जीवन सार्थक हो गया, जीवन सफल हो गया। मृत्यु, मंगलमयी मृत्यु हो गई।''

पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने आज चैतन्य की चर्चा की है। चैतन्य महाप्रभु के जीवन की बहुत सी बातें बहुत आनंद देने वाली हैं। ये मंत्र ''हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरि बोल, हरि बोल, राम बोल, राम बोल हर वक्त उनका चलता रहता था। मंत्र बोलते–बोलते

इतने मस्त हो जाते कि पौधे–पंछी आदि भी साथ महकने लग जाते, गाने लग जाते। इनका स्पर्श भक्ति का संचार कर देता था। जिसको स्पर्श करते थे उसके अंदर भी भजन कीर्तन चलने लग जाता था।

शास्त्रों की मान्यता इस प्रकार की है कि संत कृपा हो जाती है तो परमात्मा की कृपा स्वतः हो जाती है। बीच में आवश्यक component क्या है? संत की कृपा, जिसको प्राप्त हो जाती है परमात्मा कृपा स्वतः हो जाती है। उसके लिए कोई प्रयत्न, कोई प्रयास नहीं करना पड़ता। आज मस्ती की बातें कही जा रही हैं, हर वक्त मस्ती में ही रहते थे। कीर्तन अंदर चलता रहता था, बाहर भी चलता रहता था। दोनों तरह का कीर्तन चलता था। अपनी मनोस्थिति देख कर उसके अनुसार चैतन्य जी विचरते थे।

आज चलते–चलते धोबी घाट पहुँच गए हैं। एक धोबी को कपड़े धोते हुए देखा, वह हुश्शा! हुश्शा!! बोलने के साथ साथ कपड़े पटकते जा रहा है। आज पता नहीं बोलते हैं कि नहीं, पर पहले सब धोबी, घाट पर उसी स्वर से बोला करते थे फिर उसी स्वर से उसी ताल से कपड़े को पत्थर के ऊपर उसकी मैल निकालने के लिए मारा करते। संत ने मन ही मन सोचा कि यह हुश्शा! हुश्शा!! क्यों बोल रहा है? हरि बोल, हरि बोल, राम बोल, राम बोल, क्यों नहीं बोल रहा? एक मन में संकल्प उठा है कि यदि यह मंत्र बोले तो इसका सुधार ही नहीं उद्धार भी हो जाएगा। यह हुश्शा शब्द क्या है? यह तो यहीं कहीं खतम हो जाएगा, लेकिन वह शब्द, भगवन्नाम – 'हरि बोल, हरि बोल, राम बोल, राम बोल' यह शब्द उसका उद्धार कर देगा, उसका कल्याण कर देगा। उसकी आत्मा की शुद्धि कर देगा, वह परमात्मा का प्यारा बन जाएगा और उसके अंदर परमात्मा के प्रति भक्ति जागेगी। यह शब्द साधारण नहीं, हुश्शा जैसा शब्द नहीं। न जाने कितने वर्ष हो गए हैं इसको हुश्शा! हुश्शा! बोलते, कुछ बना तो है नहीं, बनना भी कुछ नहीं यदि हुश्शा! हुश्शा! ही बोलता रहा।

एक संत के अंदर इस प्रकार का अति सात्विक संकल्प जगा है, वे उस धोबी के पास चले गए। उधर धोबी मस्त, इधर सन्त मस्त। वह भगवन्नाम में मस्त, धोबी हुश्शा में मस्त, कपड़े धोने में मस्त। मस्ती दोनों की लगभग बराबर है देखने में। भीतरी बातों को कौन जाने, लेकिन देखने में तो वह भी मस्त लगा हुआ है। उसके पास जाकर खड़े हुए। लेकिन उसको पता नहीं पास कौन खड़ा है। संत ने कहा,''अरे भई ! हुश्शा! हुश्शा! मत बोल, 'हरि बोल, हरि बोल, राम बोल, राम बोल, हरि बोल, हरि बोल, राम बोल, राम बोल,' इससे तेरा कल्याण होगा। इस हुश्शा! से तेरा कुछ नहीं बनने वाला और तू समय व्यर्थ गंवा रहा है। ये अनमोल जीवन है, इसे व्यर्थ मत गंवा।'' संत बोलते जा रहे हैं, सुनने वाला कोई नहीं। धोबी को कोई सुधबुध नहीं। वह कपड़े धोने में मस्त, आवाज़ भी होती है कपड़े की, कपड़े को पत्थर पर मारा जाता है फिर पानी में डाला जाता है, फिर मारा जाता है तब साफ होता है कपड़ा। सुना नहीं उसने, सुना भी होगा तो कोई ध्यान नहीं दिया। संत थोड़ी देर देखते रहे जाकर फिर कहा,''अरे भाई ये हुश्शा! हुश्शा! छोड़, मैं तुम्हें कह रहा हूँ तू राम–राम क्यों नहीं बोलता, तू हरि–हरि क्यों नहीं बोलता? बोल, इससे कल्याण होगा, मंगल होगा तेरा। धोबी नहीं माना तो संत के अंदर से हुआ

कि मैं इसे मना के रहूँगा। परमेश्वर की प्रेरणा – ''मैं इसे मना के रहूँगा'' अतः उन्होंने धोबी का स्पर्श किया, हाथ पकड़ा, ''तू मेरी बात सुनता क्यों नहीं? मैं तुझे कह रहा हूँ न, ये हुश्शा! हुश्शा! बोलना बंद कर, 'हरि बोल, हरि बोल, राम बोल, राम बोल' इससे तेरा कल्याण होगा। अनमोल बोल हैं ये, इनको बोल हुश्शा! हुश्शा! बंद कर।'' धोबी ने गुस्से में आ कर ज़ोर से कपड़ा हाथ से पटका,''कौन है, कौन यह सिरफिरा मेरे पीछे पड़ गया है, मुझे मेरा काम नहीं करने देता''– धोबी के भीतर की बात। मुड़ कर देखा, चेहरे से नूर टपक रहा था, चेहरा देखा नहीं जा सका उससे। संत मुस्कुरा रहे थे, आँख से आँख मिली, एक आनंद की लहर अंदर दौड़ गई, एक अद्भुत सा आनंद उसने महसूस किया। ये कौन है? ये क्या है? मेरे अंदर ये क्या हो गया है? संत का संकल्प पूर्ण हुआ। 'हरि बोल, हरि बोल, हरि बोल, राम बोल, राम बोल, राम बोल' निरन्तर ध्वनि धोबी के अंदर चल पड़ी।

संत की मंडली बन गई है, मंडली के साथ घूमते, जगह–जगह वही कीर्तन करते हैं, स्वयं जगे हुए हैं औरों को जगा रहे हैं, स्वयं जाप करते हैं औरों से जपवाते हैं, कीर्तन करते हैं औरों को कीर्तन करने के लिए प्रेरणा देते हैं। एक जगह से दूसरी जगह, दूसरी से तीसरी जगह उन्हें कोई फ़रक नहीं पड़ता कि बाज़ार है या गली, शराब की दुकान है या हलवाई की दुकान कोई फ़रक नहीं पड़ता। ये अपनी मस्ती में मंडली के साथ, ढोलक के साथ, गाते जाते थे, मानो कोई संकोच नहीं कोई शर्म नहीं। बुरा काम तो कर नहीं रहे, शर्म तो उसे हो जो ग़लत काम कर रहा है उसे शर्म किस प्रकार की, उसे संकोच किस प्रकार का हो, क्यों हो?

चैतन्य महाप्रभु किसी नगर में जाकर ठहरे हुए थे, छोटा सा नगर था। उन्होंने पूछा इस नगर का सबसे क्रूर व्यक्ति कौन है, पता करो। पता लगा कि एक मदई नाम का व्यक्ति है जो चौबीस घंटे शराब में धुत्त रहता है। परिवार दुःखी, पड़ोसी दुःखी, सारे का सारा नगर दुःखी, न जाने किसको मार देगा। पता नहीं किस प्रकार अपने अंदर की आग उगलेगा। कुछ नहीं कहा जा सकता। सारा नगर उससे भयभीत है। जाओ उसे बुला कर लाओ। सेवक उसे बुलाने के लिए गए हैं, बोतल पड़ी हुई थी उसने बोतल मारी, खून बहा। जिसके भी लगी, वह बहता हुआ खून लेकर चैतन्य के पास लौटे। वह नहीं आता महाराज!। ''अरे! मैंने कहा था कि लेकर आओ उसे, खाली हाथ क्यों लौटे हो आप? किसी एक के खून निकल आया, बाकी तो ठीक थे! क्यों नहीं ले कर आए? लेकर आओ, उसे उठा कर लेकर आओ, ज़बरदस्ती लेकर आओ, उठा लाओ।'' गुरु महाराज का हुकुम था, संत का हुकुम था, सेवक उठा लाए हैं उस शराबी को, संत के सामने गद्दा पड़ा हुआ था, उस पर ला कर बिठा दिया। क्रोध से आँखें लाल हुई हैं, भय भी है कि ये मुझे मारेंगे, ये अनेक हैं और मैं अकेला हूँ, मिल कर तय करेंगे। संत ने मार पिटाई नहीं करी, पाँव पकड़े, मानो प्रणाम किया। कहा, ''बंधु।'' बस! इतनी बात कहने की ज़रूरत थी। मदई ने कहा,''ये क्या कर रहे हैं आप, मैं तो पहले ही इतना पापी हूँ, शराबी हूँ, लोग मुझ से भयभीत हैं, मेरा परिवार मुझ से भयभीत है। मैंने ज़िन्दगी में दूसरों को दुःख देने के अतिरिक्त और कुछ

किया ही नहीं। आप मेरे सिर पर पाप का बोझ और क्यों बढ़ा रहे हो, छोड़ो मुझे।'' ''नहीं छोड़ूँगा'', संत ने कहा,''नहीं छोड़ूँगा, तू पापी नहीं है। कभी अच्छे दिन भी आते हैं, बुरे दिन भी आते हैं, ऐसे ही पाप भी होता है, पुण्य भी होता है, तू बहुत पुण्य आत्मा है, बहुत अच्छी आत्मा है, कुछ तेरे कुसंस्कार इस प्रकार के थे कि वो तेरे से पाप करवा रहे हैं। खतम हुए वो दिन, अब ध्यान दे अपने परिवार की ओर। तू बाप है, तू पति है, शर्म कर कुछ। क्या कर रहा है? कुछ अपने शरीर की ओर देख, इस तरह पीता रहा तो कुछ दिन में मर जाएगा, तू खतम हो जाएगा तो तेरे परिवार का क्या होगा, तेरे माता–पिता का क्या होगा। तूने क्या किया इस जन्म में आकर। इस वक़्त उनकी सेवा करने का अवसर है उनको पालने का अवसर है, वह तुम्हें पाल रहे हैं कितनी शर्म की बात है।'' एक के बाद एक बात, संत का स्पर्श, संत का देखना और उसका जीवन बदल गया है, वापिस नहीं लौटा। संत का बन कर रहा, एक बहुत बड़ा सेवक।

संत का स्पर्श, संत की दृष्टि, संत के वाक्य, 'मंत्रमूलम् गुरोर्वाक्यं', ये कोई गलत बातें नहीं हैं exaggeration नहीं है। अतिशयोक्ति नहीं है, यह शास्त्र में वर्णन किया हुआ है। शास्त्र ने ये सब बातें अनुभव की हुई होंगी तब जाकर तो ये घोषणा करी है। स्वामी जी महाराज ने लिखा है कि चैतन्य महाप्रभु जिस–जिस को स्पर्श करते उसके भीतर भक्ति का संचार हो जाता।

(परम पूजनीय श्री महाराज जी के प्रवचन 12.1.2012) ■

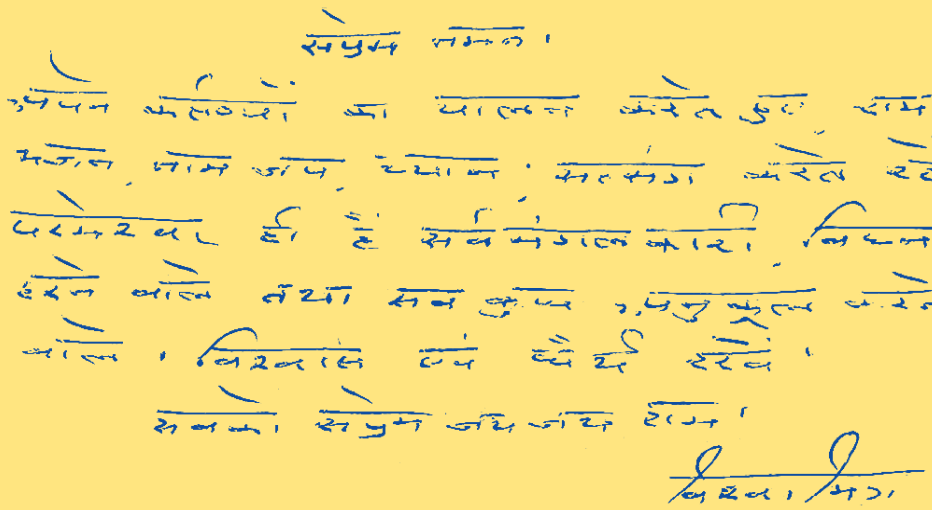

While fulfilling your duties, continue with Ram bhajan, repetition of His Name, meditation, and satsang (holy company). The Supreme Lord alone is the bestower of all auspiciousness, the remover of obstacles, and the One who makes all things favourable. Have faith and be patient.

Loving Jai Jai Ram to all.

Vishwamitter

श्रीरामशरणम् - एक ऐतिहासिक विवरण : कंडाघाट

(श्रीरामशरणम् एक ऐतिहासिक विवरण के अन्तर्गत लेखों की अगली कड़ी)

देवभूमि हिमाचल प्रदेश में कंडाघाट कस्बा जिला सोलन की संस्कृति समृद्ध वादियों में बसा है। यह राजधानी शिमला से 30 कि.मी. पहले स्थित है। यह एक ऐतिहासिक स्थान है, यहाँ एक करोल गुफा है जो पांडवों द्वारा अज्ञातवास के दौरान बनायी गयी थी। एक बावड़ी भी है जिसका पानी करोल गुफा से अंडरग्राउंड पहाड़ों द्वारा निकलता है। ग्राम देवता महादेव जी, बाबा थड़ा मूला, प्राचीन शिव मंदिर, काली मंदिर, हनुमान मंदिर, नगर खेड़ा, पूर्व शंकराचार्य ज्योतिर्मठ जी की कुटिया, आदि यहाँ के अन्य प्रसिद्ध स्थान हैं।

1997 में राम जी की असीम कृपा से और गुरुजनों के आशीर्वाद से सर्वप्रथम बार पूजनीय महाराज विश्वामित्र जी पुजारली (जुन्गा) के एक वरिष्ठ साधक के घर गए। कंडाघाट से पुजारली चौल (चैल) की ओर 32 कि.मी. दूर स्थित है। कंडाघाट के लोग कपूरथला संगत के साथ पहली बार पुजारली गए थे। वहाँ बहुत ही शांत वातावरण में महाराज जी द्वारा श्री अमृतवाणी पाठ व प्रवचन हुए और महाराज जी की कृपा से 11 साधकों ने नाम दीक्षा ली।

फिर पूजनीय महाराज जी जब भी मई या जून में शिमला जाते थे तो कंडाघाट से गुजरते समय सभी साधकों को, जो लाइन बनाकर सड़क के किनारे खड़े होते थे, अपना मंगल आशीर्वाद देते थे। अगले दिन

जोधामल निवास पर सत्संग होता था, जहाँ सभी साधक व अन्य लोग सत्संग में सम्मिलित होते थे व नाम दीक्षा भी लेते थे।

परमेश्वर की कृपा से 27 जून 2000 को पूजनीय महाराज जी का पहली बार सत्संग कंडाघाट, नई धर्मशाला में हुआ। स्थानीय लोगों ने बड़े चाव से हिस्सा लिया और लगभग 100 लोगों ने नाम दीक्षा ली। अगले दिन फिर 20 लोगों ने नाम दीक्षा ली। उन्होंने शाम को भ्रमण करते हुए कहा कि यह सौभाग्य की बात है कि नाम दीक्षा दो बार हुई।

पूज्य महाराज श्री घूमते–घूमते एक साधक के घर गए। वहाँ वे साधकों को बता रहे थे कि मैं तो माता का भक्त था, मनाली में छोटी सी कुटिया में तपस्या करता था, लेकिन माता रानी के आशीर्वाद ने मुझे राम नाम की ओर मोड़ दिया। जिस वक्त महाराज जी यह बात बता रहे थे, ऊपर सड़क में खड़े मनाली के साधक व कंडाघाट के साधक आपस में यही बात कर रहे थे। महाराज जी ने जैसे उनकी दिल की बात ही सुन ली हो!

महाराज जी की अनुमति से फिर एक कमेटी का गठन हुआ और भूमि श्रीरामशरणम् कंडाघाट के नाम रजिस्टर करवाई गयी। परमेश्वर की असीम कृपा से कंडाघाट श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य शुरू हुआ। कुछ साधक फरवरी 2004 में बिलासपुर के साधना सत्संग में सम्मिलित हुए। वहाँ पूजनीय महाराज जी ने उन साधकों से बातचीत के उपरान्त कंडाघाट श्रीरामशरणम् के उद्घाटन की तिथि 28 मार्च 2004 को तय कर दी। उस समय काफी निर्माण कार्य बाकी था, सब सोच में थे कि कैसे होगा, किन्तु प्रभु राम की और गुरुजनों की असीम कृपा से सारा निर्माण कार्य अच्छे से संपूर्ण हुआ।

उद्घाटन से एक दिन पहले अखंड जाप रखा गया जिसमें सभी साधकों ने बहुत भाव–चाव से भाग लिया। फिर वह शुभ दिन आ ही गया जिसका हम सबको बेसब्री से इंतजार था। विधिवत् हवन, यज्ञ, गृह शांति पूजा के पश्चात्, 28 मार्च 2004 को श्रीरामशरणम् कंडाघाट का शुभ उद्घाटन परम पूज्य श्री डॉ विश्वामित्र जी महाराज के कर कमलों से संपन्न हुआ। तत्पश्चात् सबने प्रसाद ग्रहण किया।

कंडाघाट श्रीरामशरणम् 35 x 40 फुट एरिया में बना हुआ है। इसमें दो मंज़िलों का निर्माण हुआ है। पहली मंज़िल में जाप का कमरा तथा श्री महाराज जी का कमरा है। दूसरी मंज़िल में सत्संग हॉल है। दोनों हॉल में लगभग 300 साधकों के बैठने की व्यवस्था है।

गुरुजनों की असीम कृपा से कंडाघाट

श्रीरामशरणम् में सुचारु रूप से दैनिक सत्संग होता है, साधक दूर–दूर गाँवों से भी आते हैं। यहाँ प्रतिदिन सुबह 7 से 8 बजे दैनिक सत्संग होता है जिसमें 15 से 20 साधक होते हैं तथा रविवार को 11 से 12-30 बजे श्री अमृतवाणी सत्संग नियमित तौर से चल रहा है जिसमें करीब 80 साधक सम्मिलित होते हैं। प्रत्येक माह पूर्णिमा का जाप सायं 5 से 6 बजे तक होता है। इसके अतिरिक्त तीनों गुरुजनों के अवतरण दिवस व निर्वाण दिवस के कार्यक्रम भी होते हैं। पूजनीय महाराज जी की इच्छानुसार यहाँ हर माह संक्रांति का जाप भी होता है। उन्होंने निर्देश दिया था कि पहाड़ों में पूर्णिमा से ज्यादा संक्रांति को मनाते हैं, इस लिए कंडाघाट में हर संक्रांति पर भी जाप किया करो। यहाँ हर साल एक दिवसीय खुले सत्संग का भी आयोजन होता है।

अंत में हम सब साधकों की यही प्रार्थना है कि हम गुरुजनों के बताये मार्ग पर निष्ठापूर्वक चल सकें और परम पिता परमात्मा एवं गुरुजनों की कृपा हम सब पर सदैव बनी रहे। ■

आप बीती

प्रकाशमय दर्शन

15 से 16 जून 2013 मनाली में खुला सत्संग था। मैं भी उसमें सम्मिलित थी। वहाँ जाने पर परम पूजनीय महाराज श्री को अपने अंग–संग ही पाया। 16 जून को सुबह ध्यान की बैठक में जब मैं बैठी थी और परम पूज्य महाराज श्री को ध्यान से देख रही थी कुछ समय पश्चात् मुझे आभास हुआ कि परम पूजनीय महाराज श्री जिस कुर्सी पर विराजमान थे, उनकी वही कुर्सी मेरे बिलकुल सामने आ गयी और फिर महाराज श्री का चेहरा प्रकाश में डूब गया। पहले मैंने इसे अपना भ्रम समझा पर ऐसा 7–8 बार हुआ कि परम पूजनीय महाराज श्री मेरे बिलकुल पास आ जाते हैं और फिर प्रकाश में डूब जाते हैं।

परम पूजनीय महाराज श्री हम सबके अंग–संग ही हैं। परम पूजनीय महाराज श्री को शत –शत नमन जिन्होंने प्रकाश के रूप में भी दर्शन दिए। हम ऐसे सतगुरु के शिष्य हैं, हम धन्य हैं ! ■

असीम कृपा

यह बात जून 1999 की है। एक साधिका का पुत्र तब दसवीं में पढ़ता था। वह ग़लती से अरनिया बॉर्डर (Arnia J&K) से पाकिस्तान चला गया था। वह साधिका अप्रैल 2003 में जम्मू में साधना सत्संग में सम्मिलित हुई। वहाँ परम पूज्य परम श्रद्धेय श्री सतगुरु देव जी महाराज जी के सम्मुख उसने अपनी व्यथा सुनाई। उसकी करुण पुकार सुनकर महाराज जी द्रवित हुए (संत तो सदा दयालु, कृपालु होते हैं) तथा उसको सांत्वना देकर समझाया कि आप भगवान् पर पूरा भरोसा रखें तथा राम जाप अधिक से अधिक करें। राम जी की कृपा से आपका बेटा अवश्य ही घर लौट आएगा। प्रभु राम जी की अपार कृपा तथा श्री महाराज जी के शुभ आशीर्वाद से उनका पुत्र कुछ ही समय पश्चात् 31 अगस्त 2003, 4 वर्ष और 1 महीने के बाद पाकिस्तान में अनेक यातनाएँ झेलकर सकुशल वापिस घर लौट आया। राम कृपा। राम कृपा।

जा पर कृपा राम की होई।
ता पर कृपा करे सब कोई।।
राम नाम मुद मंगलकारी।
विघ्न हरे सब पातक हारी।। ■

स्वामीजी महाराज का असीम प्रेम

यह बात अप्रैल 2019 की है। स्वामीजी के जन्म दिवस के कुछ दिन पहले मेरे सपने में स्वामीजी भगवे वस्त्र धारण किये हुए आये। मुझसे कहने लगे आज से मेरे जन्म दिवस पर सूजी का हलवा बना लिया करो। सपने में मुझे हलवा भी दिखा जो की बिलकुल स्वामीजी के वस्त्र जैसा ऑरेंज रंग का था।

कई दिन तक यह बात मेरे अंदर घूमती रही और मैं सोचती रही कि मुझे क्या करना चाहिए। फिर स्वामीजी के जन्मदिन से पिछली रात को मैंने सारी तैयारी कर ली कि सुबह उठकर प्रसाद बनाना है। किचन अच्छे से साफ कर लिया, dry fruits कढ़ाई, घी आदि सब तैयार रखा ताकि सुबह कोई देरी न हो। प्रभु ने सब काम अपने आप ही करवा लिया। काम खतम करके मैं अपने कमरे में आ गयी। मैं सोच ही रही थी कि सुबह सब काम ठीक से हो जाए कि मुझे ऐसा लगा कि स्वामीजी और उनके पीछे प्रेम जी महाराज और गुरुदेव सीढ़ियां उतरकर नीचे किचन में आए हैं (हमारा पूजा घर ऊपर बना हुआ है)। वे किचन में आए और आपस में बात करने लगे कि देखें तो सही कि बेटी ने कल कि तैयारी करी है कि नहीं। उन्होंने सब देखा और संतुष्ट थे कि मैंने सब तैयारी करी हुई है। मैं अपने कमरे में बैठी ये सब देख रही थी। अश्रुधारा बहती जा रही थी और मन में बड़ी शांति थी। तब से लेकर आज तक मैं स्वामीजी के जन्मदिन पर थोड़ा प्रसाद ज़रूर बनाती हूँ। प्रभु से बस यही प्रार्थना है जब तक मेरा जीवन रहे स्वामीजी की कही बात को निभाती रहूँ। जय जय राम। ■

Guru Kripa and Blessings

There have been several miraculous moments in our lives which have made us believe strongly in Pujniya Gurujans teachings.

Once we were in great financial debt, there was no way out for our survival. Our creditors were turning brutal. Prayer and faith in our Gurujans was the only thing that kept us going. Before we knew it our situation changed. Grace came in abundance. With Guru kripa today life is very different .

Another time, My husband became seriously ill. The children were very young and our business had to shut down. I had to look for a job and with Prabhu Ram Ji's grace that happened. Even though friends and family were not supportive and of the opinion that since I was not academically so qualified a decent job was tough to get by. But with Guru Kripa I got a job which gave us financial stability and ran our home for many years. Icing on the cake was .....I mentioned to Maharaj ji how will I manage my bhakti if I have to go to work? He just smiled and said Trust in HIM..... My job was such that since there was a lot of travel, I got hours at the airport and on flights to do the Amritvani ji paath and mala several more times than I could have done at home.

My husband has had several life threatening hospitalizations but with the blessings of Gurujans and the grace of Prabhu Ram, he pulled through everytime. Thus The faith and blessings continue to overwhelm us as a family each day. ■

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

(मार्च 2025 से जून 2025)

साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **रतनगढ़,** राजस्थान में 8 से 9 मार्च तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 106 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली श्रीरामशरणम्** में 12 से 14 मार्च तक होली खुले सत्संग का आयोजन हुआ। परम पूजनीय डॉ विश्वामित्र जी महाराज के अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में 15 से 16 मार्च तक श्री रामायण जी का अखण्ड पाठ हुआ।
- **फाज़लपुर कपूरथला,** पंजाब में 22 से 23 मार्च तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 16 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **नरोट मेहरा,** पंजाब में 26 मार्च को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 90 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हिसार,** हरियाणा में 29 से 30 मार्च तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 16 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **झाबुआ,** मध्यप्रदेश में 29 मार्च से 6 अप्रैल तक मौन साधना का आयोजन हुआ।
- **जंडियाला गुरु,** पंजाब में 6 अप्रैल को खुले सत्संग में साधकों के ठहरने के लिए नवीन निर्माण का उद्घाटन हुआ।
- **भरेड़ी,** हिमाचल प्रदेश में 6 अप्रैल को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 46 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 8 से 13 अप्रैल तक परम पूजनीय स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग लगा। जिसमें 15 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **ज्वाली,** हिमाचल प्रदेश में 14 अप्रैल वैशाख संक्रांति पर विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का कार्यक्रम हुआ जिसमे 628 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 18 से 21 अप्रैल तक झाबुआ के साधकों के लिए साधना सत्संग का आयोजन हुआ ।
- **हरिद्वार** में 23 से 26 अप्रैल तक झाबुआ के साधकों के लिए दूसरा साधना सत्संग लगा।
- **मंडी,** हिमाचल प्रदेश में 27 अप्रैल को एक दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 160 साधक सम्मिलित हुए और 26 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **शुक्रताल,** उत्तरप्रदेश में 2 मई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 85 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **शनाग**, हिमाचल प्रदेश में 4 से 5 मई तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ।
- **काठमंडू,** नेपाल में 15 से 17 मई तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 17 मई को 55 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली श्रीरामशरणम्** में मार्च, अप्रैल व मई में 124 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **जंडियाला गुरु,** पंजाब में 25 मई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 109 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **फरीदाबाद,** हरियाणा में 25 मई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 39 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सेलर्सबर्ग,** USA में 29 मई से 1 जून तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 11 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **भोपाल,** मध्यप्रदेश में 8 जून को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 98 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **मनाली,** हिमाचल प्रदेश में 14 से 16 जून तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 40 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **कंडाघाट,** हिमाचल प्रदेश में 22 जून को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 26 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **होशियारपुर,** पंजाब में 29 जून को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन होगा जिसमें नाम दीक्षा भी होगी।
- **हरिद्वार** में 30 जून से 3 जुलाई तक परम पूज्य डॉ विश्वामित्र जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग होगा। ■

परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज को वर्ष 1925 में व्यास पूर्णिमा के दिन भगवद् साक्षात्कार हुआ था। अतः इस वर्ष 10 जुलाई 2025 व्यास पूर्णिमा को भगवद् साक्षात्कार के 100 वर्ष पूर्ण हो जाएंगे। इस शताब्दी वर्ष को श्रीरामशरणम् के केन्द्रों ने बड़े हर्ष उल्लास के साथ मनाया। इस उपलक्ष्य में दिल्ली श्रीरामशरणम् में सायं 5:00 से 7:00 तक एक विशेष सत्संग होगा तत्पश्चात् अखण्ड जाप आरम्भ होगा।
कार्यक्रम–श्री अमृतवाणी, भजन कीर्तन व प्रवचन पीयूष से श्री स्वामी जी महाराज के प्रवचन व पूज्य श्री महाराज के प्रवचन होंगे तत्पश्चात् अखण्ड जाप आरम्भ होगा जिसकी पूर्ति 11 जुलाई प्रातः 7:00 बजे होगी।

Open Satsang (July to December 2025)

Delhi	27 to 29 July	Sunday to Tuesday
Jandiala Guru (Punjab)	03 August	Sunday
Rohtak	9 to 10 August	Saturday to Sunday
Rewari	5 to 6 September	Friday to Saturday
Obedulaganj MP	07 September	Sunday
Jalandhar	21 September	Sunday
Pathankot	4 to 5 October	Saturday to Sunday
Amritsar	12 October	Sunday
Gurdaspur	24 to 26 October	Friday to Sunday
Jammu	31 October to 2 November	Friday to Sunday
Sujanpur	7 to 9 November	Friday to Sunday
Gwalior	15 to 16 November	Saturday to Sunday
Melbourne (Australia)	5 to 7 December	Friday to Sunday
Kathua	07 December	Sunday
Bhiwani	12 to 13 December	Friday to Saturday
Alampur	21 to 23 December	Sunday to Tuesday
Surat	27 to 28 December	Saturday to Sunday

Naam Deeksha In Shree Ramsharnam Delhi (July to December 2025)

July	10	Thursday 4:00 PM
August	17	Sunday 10.30 AM
September	14	Sunday 10.30 AM
October	19	Sunday 10.30 AM
November	30	Sunday 11:00 AM
December	14	Sunday 11:00 AM

Purnima (July to December 2025)

July	10	Thursday
August	9	Saturday
September	7	Sunday
October	7	Tuesday
November	5	Wednesday
December	4	Thursday

Naam Deeksha in Other Centers (July to December 2025)

Haridwar	10-July	Thursday
Delhi (Vikaspuri)	19-July	Saturday
Jandiala Guru (Punjab)	03-August	Sunday
Chandigarh	24-August	Sunday
Obedulaganj MP	07-September	Sunday
Jalandhar	21-September	Sunday
Pathankot	05-October	Sunday
Hira nagar	07-October	Tuesday
Amritsar	12-October	Sunday
Gurdaspur	26-October	Sunday
Jammu	02-November	Sunday
Sujanpur	09-November	Sunday
Gwalior	16-November	Sunday
Kapurthala (Fazalpur)	23-November	Sunday
Melbourne (Australia)	07-December	Sunday
Kathua	07-December	Sunday
Bhiwani	13-December	Saturday
Ujjain	14-December	Sunday 2.00 PM
Nagod	14-December	Sunday 4.00 PM
Alampur	23-December	Tuesday
Surat	28-December	Sunday

Sadhna Satsang (June to December 2025)

Haridwar	30 June to 3 July	Monday to Thursday
Haridwar	5 to 10 July	Saturday to Thursday
Haridwar (Ramayani)	23 Sept to 2 October	Tuesday to next Thursday
Haridwar	11 to 14 November	Tuesday to Friday
Kapurthala (Fazalpur)	21 to 24 November	Friday to Monday

Verse 11 of RAM KRIPA AVTARAN, Page 2 of AMRIT VAANI written by Shri Swami Satyanand Ji Maharaj.

Aataa Khirdhki Dwaar Se, Pawan Tej Kaa Poor,
Hai Kripaa Tyon Aa Rahi, Karti Durgun Door.

This verse translated in English means - With opening of the windows, fresh air and light come in and drive away staleness. Likewise, Sri Ram's grace finishes all vices (bad behaviours) and blesses us with virtues (correct and good behaviours).

Use the space below to draw your understanding of the verse above. Imagine how it must be to see beautiful sunlight coming in through large windows, making your home glow and filling it with positivity. And just like that Grace of RAM blessing you and making you become bright and beautiful, and guiding you to always have right thoughts and actions.

प्रत्येक दीक्षित साधक का यह कर्तव्य है कि वह सत्य साहित्य पत्रिका खरीदे और उसे संग्रहीत करके अपने पास सुरक्षित रखे ताकि समय–समय पर उसका स्वाध्याय, चिंतन, मनन किया जा सके।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, 216, सेक्टर - 4, आई.एम.टी. मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा- 122051 से मुद्रित। संपादक: मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, 216, Sector-4, IMT Manesar, Gurugram, Haryana-122051. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

E-mail of Satya Sahitya: srs.satyasahitya@gmail.com
E-mail of Shree Ramsharnam: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. DELBIL/2017/72924